सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा का संप्रत्यय

सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा वह प्रक्रिया है जिसके अंतर्गत शिक्षक बनने के इच्छुक प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षा के मूल आधारों यथा दार्शनिक, समाजशास्त्रीय, राजनैतिक,आर्थिक, मनोवैज्ञानिक और वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषयों का सामान्य ज्ञान कराया जाता है साथ ही साथ कक्षा-शिक्षण के विभिन्न कौशलों में दक्ष किया जाता है जिससे कि वे अपने भावी उत्तरदायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन कर सकें।

यह उन व्यक्तियों के लिए आवश्यक होती है जो अध्यापन व्यवसाय के सदस्य नहीं है किंतु उनकी आकांक्षा अध्यापक सेवा में आने की रहती है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत भावी अध्यापक से अपेक्षा की जाती है कि वह एक विशेष प्रकार का प्रशिक्षण प्राप्त करें ,जिसमें उसे उत्तरदायित्व को वहन करने की दक्षता प्रदान की जाती है। जिनकी समाज इस व्यवसाय के सदस्यों से उम्मीद रखता है। यह प्रशिक्षण ग्रहण करने के पश्चात वह उन प्रवृत्तियों में विशेषज्ञता हासिल कर सकता है जिन्हें प्रयोग में लेना अध्यापन में लगे व्यक्तियों को अपनाना चाहिए। वास्तव में एक व्यक्ति को इस व्यवसाय में प्रवेश करने से पहले ही, इन विधियों को सीख लेना चाहिए।

मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, दर्शनशास्त्र, इतिहास ,अर्थशास्त्र एवं अधिक से अधिक विषय सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम का हिस्सा होते हैं। इन सभी के पर्याप्त ज्ञान के बिना कोई भी शिक्षक, अध्यापक शिक्षा में वांछित परिणाम प्राप्त करने में दक्ष नहीं हो सकता । इनके अतिरिक्त व्यावहारिक प्रशिक्षण का भी प्रावधान होता है। अध्यापक शिक्षा की प्रकृति इंटरडिसीप्लिनरी होती है, अनेक विषयों से संबंधित होती है तथा उसके घटकों के रूप में जिन का अध्ययन करना अत्यंत आवश्यक माना जाता है। इन विषयों का ज्ञान, समाज को समझने के लिए आवश्यक होता है, जिसमें बहुत जटिलताओं की भरमार होती है और उसे सही परिप्रेक्ष्य में समझने के लिए अत्यंत विशाल दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। एक अध्यापक से इन को अंजाम देने की अपेक्षा होती है तथा सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा की पाठ्यचर्या को इस प्रकार नियोजित किए जाता है, कि उनके समस्त वांछनीय ज्ञान व अनुभव मिल सकते हैं, जो उनको उन्हें आवश्यक गुण प्रदान करते हैं जो इनमें होने चाहिए। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग व राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद जैसे अभिकरण, उन्हें समय-समय पर अध्यापक शिक्षा के लिए कार्यक्रम की विभिन्न रूप रेखा तैयार की है।

सेवा पूर्व प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (एन.सी. टी. ई), जो केन्द्र सरकार का सांविधिक निकाय है, देश में शिक्षक शिक्षा के नियोजित और समन्वित विकास का जिम्मेदार है। एन.सी.टी.ई विभिन्न शिक्षक शिक्षा पाठ्यक्रमों के मानक एवं मानदंड, शिक्षक शिक्षकों के लिए न्यूनतम योग्यताएं, विभिन्न पाठ्यक्रमों के लिए छात्र-अध्यापकों के प्रवेश के लिए पाठ्यक्रम एवं घटक तथा अवधि एवं न्यूनतम योग्यता निर्धारित करती है। यह ऐसे पाठ्यक्रम शुरू करने की इच्छुक

संस्थाओं (सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त और स्व-वित्तपोषित) को मान्यता भी प्रदान करता है और उनके मानदंड और गुणवत्ता विनियमित करने और उन पर निगरानी के निमित्त व्यवस्था है।

सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा की प्रकृति

1. यह एक सामाजिक प्रक्रिया है।

2. यह अंतरविषयक उपागम पर आधारित है।

3. यह एक व्यावसायिक प्रक्रिया है।

4. व्यक्ति में अध्यापन कार्य के प्रति प्रतिबद्धता विकसित करने की प्रक्रिया है।

5. यह एक गतिशील प्रक्रिया है।

6. यह व्यक्ति में विभिन्न शिक्षण कौशल विकसित करने की प्रक्रिया है।

7. यह प्रक्रिया मनोवैज्ञानिक एवं सामाजिक पक्षों को आधार मानते हुए, पूर्ण की जाती है।

8. यह गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के प्रचार प्रसार करते हुए मानव उत्थान करने में सहायता प्रदान करती है।

सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा के सामान्य उद्देश्य

1. सेवा-पूर्व अध्यापन प्रशिक्षणार्थियों में विवेकपूर्ण विचार तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास करना।

2. सामाजिक, राष्ट्रीय मूल्यों व लक्ष्यों को प्राप्त करने की क्षमताओं का विकास करना।

3. भावी अध्यापकों को देशभक्ति की भावना, राष्ट्रीय एकीकरण ,विश्व शांति तथा मानव अधिकारों के संरक्षण के लिए संवेदनशील बनाना।

4. उनमें ऐसे सामर्थ्य का विकास करना कि वह सामाजिक परिवर्तन आधुनिकीकरण तथा राष्ट्रीय व सांस्कृतिक विरासत का विकास तथा हस्तांतरण कर सकें।

5. पर्यावरण और पारिस्थितिकी संबंधी समस्याओं के प्रति चेतना उत्पन्न करना तथा उनको समुचित समाधान करने की खोज करने योग्य बनाना।

6. सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा ग्रहण कर रहे व्यक्तियों में प्रभावी शिक्षक बनने के कौशलों व दक्षता का विकास करना।

7. उनको ज्ञान प्रदान करने व अनुभवों के पुनर्निर्माण हेतु सक्षम बनाना।

8. भावी अध्यापकों में अपने विद्यार्थियों के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास करना।

9 उनमें मूल्यों के निर्धारण, मूल्यों के लिए प्रतिबद्धता एवम मूल्यों के स्थानांतरण की भावना उत्पन्न करना ।

10. उनमें सेवाकालीन शिक्षा तथा आजीवन अधिगम के प्रति रुचि को प्रेषित करना ।

11. उनमें भारत के शैक्षिक संदर्भ में आवश्यक व्यवस्थापन तथा संगठनात्मक कौशलों का विकास करना ।

12. भविष्य के शिक्षकों को सक्षम बनाना कि वे अपने विद्यार्थियों में सौंदर्य अनुभूति के भाव का विकास कर सकें।

13. भावी अध्यापकों में अतिरिक्त शैक्षिक गतिविधियों को संगठित करने की योग्यताओं का विकास करना।

14. उनमें क्रियात्मक अनुसंधान तथा सामान्य अनुसंधान में रुचि तथा कौशलों का विकास करना।

अध्यापक शिक्षा के विशिष्ट उद्देश्य

शिक्षा के विभिन्न स्तरों के आधार पर अध्यापक शिक्षा के विभिन्न निम्नलिखित आयामों को ध्यान में रखते हुए निर्धारित किए जा सकते हैं-

पूर्व प्राथमिक स्तर पर अध्यापक शिक्षा के उद्देश्य

1. बाल विकास के सिद्धांत एक अधिगम तथा सिद्धांतों के समस्त आयाम तथा इसका संपूर्ण स्वरूप।

2. मुख्य कार्य विधियों को संयोजक एवं संगठित करने में प्रवीणता, विशेषता,प्रज्ञान, भाषा, व्यक्ति एवं सामाजिक विकास ,शिष्टाचार, आदतें ,अभिवृत्ति , सामाजिक संबंध कौशल एवम प्रबंधन कौशल आदि।

3. भावी अध्यापक एवं अध्यापिकाओं में संप्रेषण कौशल का विकास करना।

4. सर्व शिक्षा के उद्देश्यों के अनुसार, समुदाय के साथ पारस्परिक सहयोगात्मक संपर्क स्थापित करने में भावी अध्यापक एवं अध्यापिकाओं कौशल विकसित करना।

5. अध्ययन-अध्यापन के संबंध में शोध कार्य की उपादेयता को समझने और क्रियात्मक अनुसंधान संचालित करने एवं नवाचार अभ्यास को व्यवस्थित करने की क्षमता का विकास करना।

6. स्वास्थ्य शिक्षा, बाल पालन-पोषण तथा अधिगम प्रक्रिया को प्रभावित करने हेतु अभिवृत्तियों, मानव संबंधों एवं संप्रेषण के कौशलों का विकास करना।

7. अधिगम की कठिनाइयों में योग्यताओं तथा विकासात्मक अभावों के निदान की दक्षता का विकास करना।

8. प्रारंभिक बाल्यावस्था की समेकित प्रकृति देखभाल तथा शैक्षिक कार्यक्रम के लक्षणों का अबोध करना।

9. पर्यावरण घटकों की समझ जो विकास व्यवहार विभिन्न आवश्यकताओं तथा कठिनाइयों को समृद्ध करने की क्षमताओं को प्रभावित करती है, का विकास करना।

प्राथमिक स्तर पर अध्यापक शिक्षा के उद्देश्य

1.प्राथमिक स्तर पर उपयोगी मनोवैज्ञानिक तथा समाजशास्त्रीय शैक्षिक पृष्ठभूमि के बारे में भावी अध्यापकों के मध्य अवबोध का विकास करना।

2. अध्यापकों में बच्चों के लिए अधिगम अनुभव को संगठित करने हेतु उपयुक्त संसाधनों से उन्हें परिचित कराना।

3. बच्चों में जिज्ञासा,कल्पना तथा सृजनात्मकता को विकसित करने के लिए उन्हें उपयुक्त एवं आवश्यक कौशलों की संप्राप्ति हेतु सक्षम बनाना।

4. सामाजिक और संवेगात्मक समस्याओं के विश्लेषण तथा अबोध हेतु क्षमता को विकसित करना।

5. अध्यापकों में विभिन्न प्रकार के खेलकूद सारे क्रियाकलाप एवं अन्य पाठ्य सहगामी क्रियाओं के संगठन हेतु क्षमता का विकास करना।

6. शिक्षा संबंधी वांछनीय तथा विशिष्ट अधिगम समस्याओं तथा समायोजन में कठिनाई वाले प्रकरणों को खोजना।

7. कक्षा कक्ष में आने वाली विभिन्न प्रकार की समस्याओं को हल करने की दक्षता उत्पन्न करना।

8. नामांकन अवरोध में संवर्धन हेतु आवश्यक अभिवृत्ति या क्षमता एवं विद्यालय अलगाव द्वारा उत्पन्न अपव्यय को रोकना।

9. अन्य शिक्षा सेवाओं की व्यवस्था करना जैसे प्रौढ़ शिक्षा, रात्रि विद्यालय आदि में योगदान हेतु अभिवृत्ति उत्पन्न करना।

10. बाल व्यक्तित्व की रचना में गृह-विद्यालय संबंध के विकास का अवबोध उत्पन्न करना।

माध्यमिक स्तर पर अध्यापक शिक्षा के उद्देश्य

1. भावी अध्यापक और अध्यापिकाओं में माध्यमिक शिक्षा की प्रकृति सामान्य सिद्धांतों उद्देश्यों और दर्शन को समझने की क्षमता का विकास करना।

2. छात्र मनोविज्ञान अवबोध का विकास करना।

3. माध्यमिक स्तरीय शिक्षा अध्ययन के अनुकूल पाठ्य विधियों, मौलिक प्रकृति, स्वरूप तथा शिक्षण पद्धतियों का अवबोध।

4. विषय की शिक्षा शास्त्रीय विश्लेषण में प्रवीणता एवं शिक्षण अधिगम इकाइयों का संयोजन।

5. मार्गदर्शन और परामर्श देने के कौशल को उनमें विकसित करना।

6. अधिगमकर्ता केंद्रित कार्यकलाप पर आधारित शिक्षण अधिगम की व्यवस्था तथा विभिन्न प्रक्रियाओं के मीडिया संसाधन प्रयोग करने में प्रवीणता उत्पन्न करना।

7. ज्ञान की पुनरसंरचना हेतु छात्रों के मध्य सृजनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करने में उन्हें सक्षम बनाना।

8. कुछ पाठ्यक्रम के कार्यकलापों को संगठित करना तथा उनको निर्देशन करने में प्रवीणता उत्पन्न करना।

9. शिक्षा प्रणाली तथा कक्षा कक्ष परिस्थितियों को प्रभावित करने वाले कारकों तथा शक्तियों से उन्हें परिचित कराना।

10. सामुदायिक संसाधनों को शैक्षिक उपयोग में लाने के लिए सक्षम बनाना।

11. शैक्षिक व्यवसायिक तथा सर्वमान्य व्यक्तिगत समस्याओं के प्रति निर्देशन एवं परामर्श हेतु अभिवृत्ति एवं ज्ञान कौशल उत्पन्न करना।

अध्यापक शिक्षा का क्षेत्र

1.अध्यापक शिक्षा के विभिन्न स्तर-

पूर्व प्राथमिक स्तर के अध्यापकों की शिक्षा।

प्राथमिक स्तर के अध्यापकों की शिक्षा।

माध्यमिक स्तर के अध्यापकों की शिक्षा।

उच्च स्तर के अध्यापकों की शिक्षा।

अध्यापक शिक्षा में स्नातकोत्तर शिक्षा एवं अनुसंधान।

2.अध्यापक शिक्षा व्यवसाय में प्रतिबद्धता।

3.अध्यापक शिक्षा का पाठ्यक्रम, नवीन उपयुक्त शिक्षण व्यूह रचनाएं, शिक्षण विधियां आदि।

4.अध्यापक शिक्षा में सामाजिक एवं मनोवैज्ञानिक पक्षों का व्यावहारिक प्रयोग।

5.विभिन्न स्तरों पर अध्यापक शिक्षा की पाठ्यवस्तु।

6.अध्यापक शिक्षा में आने से पूर्व अभियोग्यता की जांच ।